

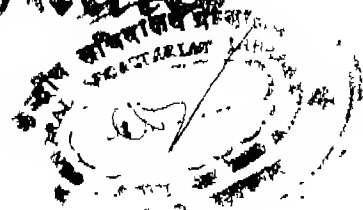


भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्रधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 515] नई दिल्ली, मंगलवार, दिसम्बर 22, 1992/पौष 1, 1914
No. 515] NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER 22, 1992/PAUSA 1, 1914

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रचा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)
अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 1992

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (मर्चेन्ट बैंककार)
नियम, 1992

सा.का.नि. 937 (अ) — केन्द्रीय सरकार, भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) की धारा 29 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ — (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (मर्चेन्ट बैंककार) नियम, 1992 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषा — इन नियमों में जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो —

(क) "अधिनियम" से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992 (1992 का 15) अभिप्रेत है;

(ख) "निगमित निकाय" का वही अर्थ होगा जो कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 2 के खंड (7) में या उसके अधीन है,

(ग) "प्रमाणपत्र" से बोर्ड द्वारा दिया गया रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र अभिप्रेत है;

(घ) "निर्गमन" से—

किसी निगमित निकाय या किसी व्यक्ति द्वारा अपनी ओर से या निगमित निकाय की ओर से किसी मर्चेन्ट बैंककार के माध्यम से,

(i) विक्रय के लिए प्रतिभूतियों का पब्लिक आफर;

(ii) किसी अन्य साधन द्वारा प्रतिभूतियों का क्रय या विक्रय या उनका अंतरण, अभिप्रेत है;

(ङ) "मर्चेन्ट बैंककार" से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो या तो प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय या अभिदाय से संबंधित दंतजाम करके या प्रबन्धक, परामर्शी या सलाहकार के रूप में कार्य करके या उक्त निर्गम प्रबन्ध के संबंध में निगमित सलाहकारी सेवा देकर निर्गम प्रबन्ध के कारबार में लगा हुआ है।

(च) “विनियम” से भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (मर्चेन्ट बैंकर्स) विनियम, 1992 अभिप्रेत है।

3. बिना प्रमाणपत्र के किसी व्यक्ति द्वारा मर्चेन्ट बैंकर्स के रूप में कार्य का न किया जाना :—कोई व्यक्ति मर्चेन्ट बैंकर्स के रूप में तब तक कोई क्रियाकलाप नहीं करेगा जब तक कि विनियमों के अधीन बोर्ड द्वारा दिया गया उससे पास कोई प्रमाणपत्र न हो;

परन्तु ऐसा व्यक्ति जो अधिनियम के प्रभाव में आने से पूर्व मर्चेन्ट बैंकर्स के रूप में लगा हुआ था, यदि उसने ऐसे पंजीकरण के लिए कोई आवेदन कर दिया है तो उक्त आवेदन के निपटान तक मर्चेन्ट बैंकर्स के रूप में क्रियाकलाप जारी रख सकता है ;

4. मर्चेन्ट बैंकर्स को प्रमाणपत्र मंजूर किए जाने या नवीकरण के लिए शर्तें :—बोर्ड किसी मर्चेन्ट बैंकर्स को निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए प्रमाणपत्र मंजूर या नवीकरण कर सवेगा, अर्थात् :—

- (क) मर्चेन्ट बैंकर्स अपनी प्रास्थिति और गठन में किसी परिवर्तन की दशा में मर्चेन्ट बैंकर्स के रूप में अपने क्रियाकलापों को जारी रखने के लिए बोर्ड से पूर्व अनुमति प्राप्त करेगा;
- (ख) वह, यथास्थिति, रजिस्ट्रीकरण या नवीकरण के लिए फीस की रकम का संदाय विनियमों में उपबंधित रीति से करेगा;
- (ग) वह मुवक्किलों की शिकायतों को दूर करने के लिए पर्याप्त कदम शिकायत प्राप्त होने की तारीख से एक मास के भीतर उठावेगा और प्राप्त हुई शिकायतों की संख्या, प्रकृति और अन्य विशिष्टियों के बारे में बोर्ड को इतिला देगा;
- (घ) वह मर्चेन्ट बैंकर्स द्वारा किए गए क्रियाकलापों की बाबत अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों और विनियमों का पालन करेगा।

5. प्रमाणपत्र की विधिमान्यता की अवधि :—नियम 4 के अधीन दिया गया यथास्थिति, रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र या उसका नवीकरण मर्चेन्ट बैंकर्स को उससे जारी किए जाने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए विधिमान्य रहेगा।

[फा. सं. 20(15)एस ई/92]
वाई. वेणुगोपाल रेड्डी, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd December, 1992

SECURITIES AND EXCHANGE BOARD OF INDIA (MERCHANT BANKERS) RULES 1992

G.S.R. 937(E).—In exercise of the powers conferred by section 29 of the Securities and Exchange Board of India Act,

1992 (15 of 1992), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement :—(1) These rules may be called the Securities and Exchange Board of India (Merchant Bankers) Rules, 1992.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions :—In these rules, unless the context otherwise requires :—

- (a) “Act” means the Securities and Exchange Board of India Act, 1992 (15 of 1992);
- (b) “body corporate” shall have the meaning assigned to it in or under clause (7) of section 2 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);
- (c) “certificate” means a certificate of registration issued by the Board;
- (d) “issue” means—
 - (i) public offer of securities for sale;
 - (ii) sale or purchase of securities or transfer thereof by any other means,
- by any body corporate or any person on his own behalf or on behalf of the body corporate through a merchant banker;
- (e) “merchant banker” means any persons who is engaged in the business of issue management either by making arrangements regarding selling, buying or subscribing to securities or acting as manager, consultant, adviser or rendering corporate advisory service in relation to such issue management.
- (f) “regulations” means the Securities and Exchange Board of India (Merchant Bankers) Regulations, 1992.

3. No person to act as merchant banker without registration :—No person shall carry on any activity as a merchant-banker unless he holds a certificate granted by the Board under the regulations :

Provided that such person, who were engaged as merchant banker prior to the coming into force of the Act, may continue to carry on activity as merchant banker if he has made an application for such registration till the disposal of such application.

4. Conditions to grant or renewal of certificate to merchant banker :—The Board may grant or renew a certificate to a merchant banker subject to the following conditions, namely :

- (a) merchant banker, in case of any change in its status and constitution shall obtain the prior permission of the Board to carry on its activities as a merchant banker;
- (b) he shall pay the amount of fees for registration or renewal; as the case may be, in the manner provided in the regulations;
- (c) he shall take adequate steps for redressal of grievances of the investors within one month of the date of the receipt of the complaint and keep the Board informed about the number, nature and other particulars of the complaints received;
- (d) he shall abide by the rules and regulations made under the Act in respect of the activities carried on by the merchant banker.

5. Period of validity of the certificate :—The certificate of the registration or its renewal, as the case may be issued under rule 4 shall be valid for a period of three years from the date of its issue to the applicant.

[F. No. 20(15)SE/92]
Y. VENUGOPAL REDDY, Jr. Secy.